IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श

शालिनी खोवाला, शोधार्थी, हिंदी विभाग, राधा गोविंद विश्वविद्यालय, झारखंड

आज समाज में किन्नर या हिजड़े पर चर्चाएं हो रहे हैं। किन्नर के मानव अधिकारों के लिए वैश्विक धरातल पर भी प्रयास हो रहे हैं। भारत में भी तीसरे लिंग के रूप में उनके अधिकारों को मान्यता दी गई है। किन्नरों की संख्या देश में 50 लाख से ऊपर है। इतनी संख्या में होने पर भी यह समाज के हाशिए पर ही रखे जाते हैं। उनके साथ जानवरों सा व्यवहार किया जाता है। उनके अधिकारों और अस्तित्व को समाज में अनदेखा किया जाता है। समाज का उपेक्षित व्यवहार, बेरोजगारी, शिक्षा का अभाव, अपने ही परिवार द्वारा त्याग दिए जाने के कारण अंदर से टूटे हुए हैं। किन्नरों को लेकर उपन्यास लिखने का सिलसिला अब शुरू हो चुका है। यह सभी उपन्यास किन्नरों की मजबूरी, व्यथाओं, शोषण, पीड़ा और भेदभाव को सजीवता से दर्शाते हैं। यह उपन्यास जहां एक तरफ किन्नर यथार्थ को व्यक्त करते हैं, वहीं दूसरी तरफ किन्नरों में आ रही चेतना को भी प्रकट करते हैं।[1]

समकालीन हिंदी उपन्यासों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, मुस्लिम विमर्श और किन्नर विमर्श को लेकर एक गंभीर चिंतन दिखाई देता है। नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' किन्नर समुदाय के अंतरंग जीवन की मार्मिक गाथा को प्रस्तुत करता है। 'यमदीप' में नंदरानी की मां अपने बच्चों को पढ़ाना-लिखाना चाहती है, उसे लायक बनाना चाहती है लेकिन पढ़ने में तेज होने पर भी वह अपनी लायक और होनहार बेटी की मदद नहीं कर पाती। नंदरानी की मां से कहा जाता है, "माता किसी स्कूल में आज तक हिजड़े को पढ़ते-लिखते देखा है? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? मास्टरी में, पुलिस में, कलेक्ट्री में- किसी में भी अरे! इसकी दुनिया यही है, माता जी कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़े हिजड़े को पढ़ाओ लिखाओ नौकरी दो जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार कर रही है।"[2] इस उपन्यास के माध्यम से नीरजा माधव ने दिखाया है कि आठवीं कक्षा तक पहुंचते-पहुंचते उसमें स्त्री योजित शरीरांग के साथ दाढ़ी, मूंछें भी आ जाती हैं। बाद में वह समाज के डर से वह हिजड़ों की बस्ती में चली जाती है और नंदरानी से नाज बीवी बन जाती है। नीरजा माधव ने इस उपन्यास में किन्नरों की ज्ञात-अज्ञात सभी अनछुए पहलुओं को बड़ी बेबाकी के साथ पाठकों के सामने रखा है।

पत्रकार निर्मला भुराडिया का उपन्यास 'गुलाम मंडी' मूलतः मनुष्यों की खरीद-फरोख्त यानी ह्यूमन ट्रैफिकिंग, अपने सौंदर्य पर मुग्ध कल्याणी, वेश्यावृत्ति, फिल्म उद्योग, एड्स रोगियों, मनोचिकित्सक का काम करते बाबा मिलारेपा, लक्ष्मी, जानकी, मोहन और इन सबके साथ किन्नर रानी और अंगूरी की कथा है। उपन्यास के पूर्वार्ध में एक अध्याय किन्नरों पर दिया गया है लेकिन उससे पहले सर्पदंश के माध्यम से अपनी पीड़ा को कम करवाने का प्रयास करने के क्रम में कल्याणी की अंगूरी और रानी से मुलाकात किन्नरों के डेरे पर ही दिखाई गई है। उपन्यास की भूमिका में लेखिका ने 'थर्ड जेंडर' के प्रति कुछ परंपरागत रस्मी बातें भी कही हैं जो संवेदनशीलता की परिचायक कही जा सकती हैं।[3]

'किन्नर कथा' किन्नर समाज की पीड़ा की पैरवी में लिखा गया उपन्यास प्रबुद्ध पाठक वर्ग का ध्यान आकर्षित करता है और किन्नरों को अपने सम्मान और अधिकारों के प्रति जागरुक करता है। इसमें समाज, परंपरा और खोखले मूल्यों पर एक साथ चोट करते हुए नवीन जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। 'किन्नर कथा' के माध्यम से किन्नरों की आह और वेदना की

उपस्थिति दर्ज की गई है जो अपने ही परिवार और समाज से निरंतर दुखों की पीड़ा झेलते रहते हैं। मानव समाज अपने चरम विकास के युग में प्रवेश करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है किंतु समाज का यह वर्ग अभी भी इस मुख्य धारा से जुड़ नहीं पा रहा है, इसके मूल में अनेक कारण विद्यमान है किंतु मूल कारण है जन सामान्य की इस वर्ग के प्रति हेय मानसिक अवधारणा। इस उपन्यास में राजघराने में जन्मी चंदा की कहानी है जिसके किन्नर होने का पता चलने पर अपने ही पिता के द्वारा मरवाने का प्रयास किया जाता है, "उसके खानदान की साख को बट्टा न लगे, वंश में हिजड़ा बच्चा पैदा होने के कलंक से बच जाए। कुल की मर्यादा सुरक्षित रहे, वह सौंप दे अपनी बेटी को मृत्यु का ग्रास बनने के लिए।"[4] उपन्यास के कथानक में अधूरी देह की पीड़ा, सामाजिक उपेक्षा, पारंपरिक एवं पारस्परिक संघर्ष, अवसाद एवं विद्वेष जैसे नकारात्मक भावों को दर्शाते हुए लेखक ने किन्नर समाज की कारुणिक कथा को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। शारीरिक रूप से यदि कोई विकलांग हो तो उसको इतना दंश नहीं झेलना पड़ता जितना यौनिक रूप से विकलांग व्यक्ति को। इससे वह मानसिक और शारीरिक दोनों ही रूपों में हीन ग्रंथि का शिकार हो जाता है। इसमें किन्नरों की अनदेखी, अनसुनी पीड़ा की खुलकर अभिव्यक्ति हो पाई है।

'तीसरी ताली' उपन्यास के लेखक प्रदीप सौरभ उस तीसरी ताली की बात करते हैं जिसे समाज में मान्यता नहीं मिली है। इस समाज में जिसे हम समाज का हिस्सा नहीं मानते, उनकी अपनी समस्याएं हैं। जेंडर के अकेलेपन और जेंडर के अलगाव के बावजूद समाज में जीने की ललक से भरपूर दुनिया का परिचय करवाता है यह उपन्यास। इसमें ऐसे तमाम सच उभरकर सामने आए हैं, जीवन के ऐसे महत्वपूर्ण सच जिन्हें हम माने या न माने लेकिन उनका अपना वजूद है। यह उपन्यास प्रदीप सौरभ के साहसी लेखन की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। यह कहानी है गौतम साहब और आनंदी आंटी की, जिनके बच्चा होने पर आए किन्नरों के लिए दरवाजा नहीं खोलते हैं इस डर से की कहीं वे उनके बच्चे को उठाकर न ले जाएं। बच्चा होने पर खुशी के स्थान पर शोक मनाया जाता है। ऐसे बच्चों के पैदा होने का केवल अंत आत्महत्या के रूप में परिणति, किन्नर जीवन का एक और सच उपन्यास के माध्यम से हमारे सामने आता है। आर्थिक विषमता के चलते किन्नरों के कार्यकलापों पर भी लेखक ने प्रकाश डाला है जिसमें उनको भीख तक माँगनी पड़ती है यथा, "मैं मर्द रहूं, औरत रहूं या फिर हिजड़ा बन जाऊं, इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता, पेट की आग तो न जाने बड़े-बड़ों को क्या-क्या बना देती है।"[5] यहां किन्नर समाज की उस सच्चाई को सामने रखने का प्रयास किया गया है जिसे दुनिया से छिपाकर रखा जाता है। उभयलिंगी वर्जित समाज के तहखाने में झांकने का लेखक ने भरपूर प्रयास किया है। यह उस दुनिया की कहानी है जिसे न तो जीने का अधिकार है और न ही सभ्य समाज में रहने का।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हमारे समाज के एक अभिन्न अंग किन्नर समुदाय पर लिखे गए ये उपन्यास कहीं-न-कहीं हमारे समाज को किन्नरों की पीड़ा, दुख-दर्द, जीवन जीने की विभीषिका और भयंकर त्रासद स्थिति से अवगत कराना चाहते हैं। इन उपन्यासों में एक किन्नर होने का दर्द क्या होता है? उस नारकीय जीवन में व्याप्त घृणा, अपमान, घुटन और इससे बाहर निकलने की बेचैनी क्या होती है? इसका सफल चित्रण किया गया है। इन सबसे मुक्ति की कामना करता यह समाज आज अपने सम्मान और अधिकारों की मांग के लिए अपनी झोली फैलाए खड़ा है जिसे हमारे समर्थन की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :

1. अग्रवाल, डॉ. प्रीति, समकालीन हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च, 2020, 6 (4), पृ. 162
2. माधव, नीरजा, यमदीप, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2017, पृ. 13
3. सिंह, शरद (संपादक), थर्ड जेंडर विमर्श, सामयिक पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण- 2019, पृ. 60
4. भीष्म, महेंद्र, किन्नर कथा, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण- 2011, पृ. 31
5. सौरभ, प्रदीप, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2011, पृ. 5